सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या–cm-202
26/04/2017

वीर कुँवर सिंह शहादत दिवस समारोह का मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन

पटना, 26 अप्रैल 2017 :– मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने आज श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में वीर कुँवर सिंह शहादत दिवस समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुये कहा कि मैं सबसे आयोजको को धन्यवाद देता हूँ। आप सभी हर वर्ष विजय उत्सव का आयोजन करते रहते हैं। इस वर्ष भी 26 अप्रैल को शहादत दिवस पर आपलोगों ने इस तरह का आयोजन, इसलिये आप सभी लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा बाबू कुँवर सिंह के चरणों में श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ। आजादी की लड़ाई में उनके योगदान को जानने एवं समझने की जरूरत है। इनकी बड़ी भूमिका है, 23 अगस्त 1857 से 22 अप्रैल 1958 तक उन्होंने इतिहास में एक लंबी मार्च की। आजादी की लड़ाई में इतनी बड़ी लंबी मार्च का मिसाल देखने को कम मिलता है। लखनऊ से लौटते वक्त गंगा नदी पार करने के क्रम में उनकी बांह में गोली लगी और उन्होंने जख्मी बांह को तलवार से काटकर गंगा को अर्पित कर दिया। जगदीशपुर आजाद था। 23 अप्रैल 1858 विजयोत्सव का माहौल था। अपने जन्म और मृत्यु दोनों वक्त उनका जगदीशपुर आजाद ही रहा। उनमें कुशल नेतृत्व एवं अभूतपूर्व संगठन क्षमता मौजूद था। दानापुर में सैनिक छावनी में सक्रिय भागीदारी कर उनका नेतृत्व किया। नौ महीने तक लौंग मार्च के दौरान उन्होंने मिल, ली ग्राण्ड, डगलस आदि अंग्रेजी फौजों को पराजित किया। मिर्जापुर, रेवा, बांदा, काल्पी, कानपुर होते हुये लखनऊ और फिर जगदीशपुर आये। चार सौ मील के इस लौंग मार्च में उनको समाज के सभी वर्गों को, सैनिकों के साथ–साथ स्थानीय लोगों का भी समर्थन मिला। एक दस्तावेज के अनुसार बाबू वीर कुँवर सिंह के नेतृत्व में एक समय में दस हजार सैनिक लड़ रहे थे। शाहाबाद से बनारस तक में सभी गॉव अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ इस जंग में शामिल थे। 1857 के पहली लड़ाई के नायक वीर कुँवर सिंह बिहार के ही थे, फिर 60 साल बाद 1917 में गॉधी जी ने पहला सफल सत्याग्रह बिहार के चम्पारण में की। उसके तीस साल बाद 1947 में देश आजाद हो गया। ये बहुत ही रोमांचित करने वाली बात है इसलिये बाबू वीर कुँवर सिंह की भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय स्तर पर उनको मान्यता मिलनी चाहिये। उन्होंने समाज के सभी वर्गों को एक साथ जोड़ा। किसान, युवक, नारी, मुस्लिम, हिन्दू सभी को अपने सैन्य कार्यक्रम का हिस्सा बनाया। नारी सशक्तिकरण की दिशा में भी उन्होंने सफल कदम उठाया। अपने दोनों पुत्रों को स्वतंत्रता की लड़ाई में कुर्बान किया, यह अदभूत है। अगले वर्ष 2018 में 160वां विजयोत्सव मनाया जायेगा। 160वें वर्षगांठ का आयोजन ज्ञान भवन में भव्य आयोजित किया जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि डुमरांव में वीर कुँवर सिंह की जो प्रतिमा बनकर तैयार है, उसका अनावरण करना मेरे लिये गर्व की बात होगी। पहली आजादी की लड़ाई का नेतृत्व 80 साल की उम्र में करना बहुत बड़ा उदाहरण है और समाज के वर्गों को जोड़कर चलना बड़ी बात है। शराबबंदी से महिलाओं और नई पीढ़ी खुश है। पहले आशंका थी, अब प्रसन्नता है। माहौल बदला है। साइकिल योजना, शराबबंदी, प्रकाश उत्सव से समाज में सद्भाव, प्रेम का माहौल बना है। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विशेषकर बाल विवाह, दहेज प्रथा के खिलाफ

अभियान चलाया जायेगा। समाज में अशिक्षा के कारण हो रहे बाल विवाह से स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। महापुरूषों को सिर्फ याद करने से नहीं बल्कि उनके विचारों को अमल करना चाहिये। नशामुक्ति के पक्ष में चार करोड़ लोगों ने समर्थन देकर बिहार का माहौल बदला है। समाज सुधार में भी बिहार को आन्दोलन का सूत्रपात करना चाहिये। राजनीति के क्षेत्र में बिहार हमेशा से देश का नेतृत्व किया है। आत्म सम्मान एवं स्वाभिमान के साथ दूसरों से प्रेम, सद्भाव और भाईचारा का पहल करनी चाहिये।

इस अवसर पर जदयू प्रदेश अध्यक्ष सह सांसद श्री वशिष्ठ नारायण सिंह, जदयू नेता श्री श्याम रजक, उद्योग मंत्री श्री जयकुमार सिंह, पूर्व मंत्री श्री गौतम सिंह, विधायकगण, विधान पार्षदगण सहित बड़ी संख्या में अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

******